कि लौकिक लाभ का पारमार्थिक उन्नति से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, तो ये सब शुद्ध भक्त बन जाते हैं। जब तक ऐसी परम शुद्ध अवस्था प्राप्त नहीं होती, तब तक भगवत्सेवी भक्तों में सकाम कर्म के दोष बने रहते हैं और कभी-कभी वे ज्ञानादि का अन्वेषण भी किया करते हैं। अतः विशुद्ध भक्तियोग के स्तर पर आने के लिए इन सभी बाधाओं का उल्लंघन करना आवश्यक है।

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।।१७।।

तेषाम् =उनमें; **ज्ञानी** =ज्ञानवान्; **नित्ययुक्तः** =सदा तत्पर; **एकभक्तिः** =अनन्य भक्ति वाला; **विशिष्यते** =अतिश्रेष्ठ है; **प्रियः** =अतिशय प्रेमास्पद हूँ; **हि** =निःसन्देह; **ज्ञानिनः** =ज्ञानवान् का; **अत्यर्थम्** =अत्यन्त; **अहम्** =मैं; **सः** =वह; **च** =भी; **मम** =मेरा; **प्रियः** =प्रिय है।

अनुवाद

इन सब में शुद्ध भक्तियोग द्वारा मुझसे युक्त ज्ञानी सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि मैं उसे अत्यन्त प्रिय हूँ और वह मुझे अतिशय प्रिय है।।१७।।

तात्पर्य

विषयासक्ति के सब दोषों से मुक्त होने पर आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु एवं ज्ञानी, ये सब शुद्ध भक्त बन सकते हैं। परन्तु इनमें भी, निस्पृह तत्त्वज्ञानी वास्तव में शुद्ध भगवद्भक्त है। अतः चारों श्रेणियों में जो पुरुष भगवद्भक्ति-परायण है और पूर्ण ज्ञानी भी है, वह श्रीभगवान् के अनुसार सर्वश्रेष्ठ है। तत्त्वजिज्ञासु जान जाता है कि उसका आत्म-स्वरूप देह से भिन्न है। उत्तरोत्तर उन्नति करने पर उसे निर्विशेष-ब्रह्म एवं परमात्मा का ज्ञान भी उपलब्ध हो सकता है। जब वह पूर्ण शुद्ध हो जाता है तो समझता है कि वह स्वरूप से श्रीभगवान् का नित्यदास है। अतएव महाभागवतों के सत्संग से जिज्ञासु, आर्त, अर्थार्थी और ज्ञानवान्—ये सभी शुद्ध हो जाते हैं। परन्तु साधनावस्था में भगवद्भक्ति के परायण पूर्ण ज्ञानी श्रीभगवान् का अतिशय प्रेमपात्र है। श्रीभगवान् की दिव्यता के शुद्ध ज्ञानी पुरुष का श्रीभगवान् इस प्रकार संरक्षण करते हैं कि संसार के दोष उसका स्पर्श तक नहीं कर पाते।

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्।।१८।।

उदाराः =उदार हैं; **सर्वे एव** =सभी; **एते** =ये; **ज्ञानी** =ज्ञानवान्; **तु** =तो; **आत्मा एव** =मेरा आत्मा ही; **मे** =मेरा; **मतम्** =मत है; **आस्थितः** =स्थित है; **सः** =वह; **हि** =निःसन्देह; **युक्तात्मा** =भक्ति में संलग्न; **माम्** =मेरी; **एव** =निःसन्देह; **अनुत्तमाम्** =परम उत्तम; **गतिम्** =लक्ष्य।